सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स चउत्थे खंडे वेयणाए

वेदणाखेत्तविहाणाणुओगद्दारं

वेयणाखेत्तविहाणे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणुओगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति ॥ १ ॥

वेदणाणिक्खित्तल्लियाखेत्तं णिक्खिविदव्वं । किमट्ठं खेत्तणिक्खेवो कीरदे ? अपयदखेत्तट्ठाणं पडिसेहं कादूण पयदखेत्तट्ठपरूवणट्ठं । उत्तं च–

अपयदणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्त च ।
संसयविणासणटठ तच्चत्थवहारणट्ठं च ॥ १ ॥

वेदनाक्षेत्रविधान यह जो अनुयोगद्वार है उसमें ये तीन अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं ॥ १ ॥

वेदनामें निक्षिप्त क्षेत्रका यहां निक्षेप करना चाहिये ।

शंका– क्षेत्रका निक्षेप किसलिये करते हैं ?

समाधान– अप्रकृत क्षेत्रस्थानका प्रतिषेध करके प्रकृत क्षेत्रकी अर्थप्ररूपणा करनेके लिये क्षेत्रका निक्षेप करते हैं । कहा भी है–

अप्रकृतका निवारण करनेके लिये, प्रकृतकी प्ररूपणा करनेके लिये, संशयको नष्ट करनेके लिये, और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये निक्षेप किया जाता है ॥ १ ॥

तत्थ खेत्तं चउव्विहं णामखेत्तं ट्ठवणखेत्तं दव्वखेतं भावखेत्तं चेदि। तत्थ णाम-ट्ठवणखेत्ताणि सुगमाणि। दव्वखेत्तं दुविहमागम-णोआगमदव्वखेत्तभेएण। तत्थ आगमदव्वखेत्तं णाम खेत्तपाहुडजाणगो अणुवजुत्तो। णोआगमदव्वखेत्तं तिविहं जाणुगसरीर-भवियतव्वदिरित्तभेदेण। तत्थ जाणुगसरीर-भवियणोआगमदव्वखेत्ताणि सुगमाणि। तव्वदिरित्त(१)णोआगमखेत्तमागासं। तं दुविहं लोगागासमलोगागासमिदि। तत्थ लोक्यन्ते उपलभ्यन्ते यस्मिन् जीवादयः पदार्थाः स लोकस्तद्विपरीतस्त्वलोकः। कधमागासस्स खेत्तववएसो? क्षीयन्ति निवसन्त्यस्मिन् जीवादय इति आकाशस्य क्षेत्रत्वोपपत्तेः। भावखेत्तं दुविह आगम-णोआगमभावखेत्तभेएण। तत्थ खेत्तपाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभावखेत्तं। सव्वदव्वाणमप्पप्पणो भावो णोआगमभावखेत्तं। कधं भावस्स खेत्तववएसो ? तत्थ सव्वदव्वावट्ठाणादो।

एत्थ णोआगमदव्वखेत्तेण अहियारो। अट्ठविहकम्मदव्वस्स वेयणा* त्ति सण्णा। वेयणाए खेत्तं वेयणाखेत्तं, वेयणाखेत्तस्स विहाणं वेयणाखेत्तविहाणमिदि पंचमस्स अणुओगद्दारस्स गुणणामं। इदिसद्दो ववच्छेदफलो। तत्थ वेयणखेत्तविहाणे इमाणि

क्षेत्र चार प्रकार है -- नामक्षेत्र, स्थापनाक्षेत्र, द्रव्यक्षेत्र और भावक्षेत्र। उनमें नामक्षेत्र और स्थापनाक्षेत्र सुगम हैं। द्रव्यक्षेत्र आगम और नोआगम द्रव्यक्षेत्रके भेदसे दो प्रकार है। उनमें क्षेत्रप्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यक्षेत्र कहलाता है। नोआगमद्रव्यक्षेत्र ज्ञायकशरीर, भावि और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकार है। उनमें ज्ञायकशरीर और भावि नोआगमद्रव्यक्षेत्र सुगम हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यक्षेत्र क्षेत्र है। वह दो प्रकार है--लोकाकाश और अलोकाकाश। इनमें जहां जीवादिक पदार्थ देखे जाते हैं या जाने जाते हैं वह लोक है। उससे विपरीत अलोक है।

शंका-- आकाशकी क्षेत्र संज्ञा कैसे है ?

समाधान-- 'क्षीयन्ति अस्मिन्' अर्थात् जिसमें जीवादिक रहते हैं वह आकाश है, इस निरुक्तिके अनुसार आकाशको क्षेत्र कहना उचित ही है।

भावक्षेत्र आगम और नोआगम भावक्षेत्रके भेदसे दो प्रकार है। उनमें क्षेत्रप्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावक्षेत्र है। सब द्रव्योंका अपना अपना भाव नोआगम-भावक्षेत्र कहलाता है।

शंका--भावकी क्षेत्र संज्ञा कैसे हो सकती है ?

समाधान -- उसमें सब द्रव्योंका अवस्थान होनेसे भावकी क्षेत्र संज्ञा बन जाती है।

यहां नोआगमद्रव्यक्षेत्रका अधिकार है। आठ प्रकारके कर्मद्रव्यकी वेदना संज्ञा है। वेदनाका क्षेत्र वेदनाक्षेत्र, वेदनाक्षेत्रका विधान वेदनाक्षेत्रविधान। यह पांचवे अनुयोगद्वारका गुणनाम है। सूत्रमे स्थित 'इति' शब्द व्यवच्छेद करनेवाला है। उस वेदनाक्षेत्रविधानमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं।

---

(१) प्रतिषु 'तव्वदिरित्त वि-' ताप्रतौ 'तव्वदिरित्त (म) वि' इतिपाठः। * प्रतिषु 'दव्वस्स कम्मवेयणा त्ति इति पाठः।

तिण्णि अणुओगद्दाराणि हवंति। एत्थ अहियारा तिण्णि चेव किमट्ठ परूविज्जंति? ण, अण्णेसिमेत्थ संभवाभावादो। कुदो? (ण) संखा-ट्ठाण-जीवसमुदाहाराणमेत्थ संभवो, उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्णभेदभिण्णसामित्ताणुओगद्दारे एदेसिमंतब्भावादो। ण ओज-जुम्माणुओगद्दारस्स वि संभवो, तस्स पदमीमांसाए पवेसादो। ण गुणगाराणि-ओगद्दारस्स वि संभवो, तस्स अप्पाबहुए पवेसादो। तम्हः तिण्णि चेव अणुओग-द्दाराणि होंति त्ति सिद्धं।

पदमीमांसा सामित्तं अप्पाबहुए त्ति ॥ २ ॥

पढमं चेव पदमीमांसा किमट्ठमुच्चदे? ण, पदेसु* अणवगएसु सामित्तप्पाबहुआणं परूवणोवायाभावादो†। तदणंतरं सामित्ताणुओगद्दारमेव किमट्ठं वुच्चदे? ण अणवगए पदप्पमाणे तदप्पाबहुगाणुववत्तीदो। तम्हा एसेव अहियारविण्णासक्कमो इच्छियव्वो‡, णिरवज्जत्तादो।

पदमीमांसाए णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो किं उक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा? ॥ ३ ॥

शंका– यहां केवल तीन अधिकारोंकी प्ररूपणा किसलिये की जाती है।

समाधान– नहीं, क्योंकि, और दूसरे अधिकार यहां सम्भव नहीं है। कारण कि संख्या, स्थान और जीवसमुदाहार तो यहां सम्भव नहीं हैं। क्योंकि, उनका अन्तर्भाव उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य व अजघन्य भेदसे भिन्न स्वामित्वअनुयोगद्वारमें होता है। ओज-युग्मानुयोगद्वार भी संभव नहीं है, क्योंकि उसका प्रवेश पदमीमांसामें है। गुणाकार अनुयोगद्वार भी सम्भव नहीं है, क्योंकि उसका प्रवेश अल्पबहुत्वमें है। इस कारण तीन ही अनुयोगद्वार हैं, यह सिद्ध है।

पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये तीन अनुयोगद्वार यहां ज्ञातव्य हैं ॥२॥

शंका– पदमीमांसाको पहले ही किसलिये कहा जाता है ?

समाधान– चूंकि पदोंका ज्ञान न होनेपर स्वामित्व और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की नहीं जा सकती, अत एव पहले पदमीमांसाकी प्ररूपणा की जा रही है।

शंका– उसके पश्चात् स्वामित्व अनुयोगद्वारको ही किसलिये कहते हैं ?

समाधान– नही, क्योंकि, पदप्रमाण स्वामीका ज्ञान न होनेपर उनका अल्पबहुत्व बन नहीं सकता। इस कारण निर्दोष होनेसे उक्त अधिकारोंके इसी विन्यासक्रमको स्वीकार करना चाहिये।

पदमीमांसामें– ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, और क्या अजघन्य है। ॥ ३ ॥

---

* ताप्रतौ 'पदे (से) सु' इति पाठः। † प्रतिषु 'पदणोवायाभावादो' इति पाठः।
‡ अ-प्रतौ 'इच्छेदव्वो' इति पाठः

एत्थ णाणावरणग्गहणेण सेसकम्माणं पडिसेहो कदो। दव्व-काल-भावादिपडिसेहट्ठं खेत्तणिद्देसो कदो। एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेण अण्णाओ णव पुच्छाओ एदेण सूचिदाओ। तम्हा णाणावरणीयवेयणा किमुक्कस्सा, किमणुक्कस्सा किं जहण्णा, किमजहण्णा, किं सादिया, किमणादिया, किं धुवा, किमद्धुवा, किमोजा, किं जुम्मा किमोमा, किं विसिट्ठा, किं णोम-णोविसिट्ठा त्ति वत्तव्वं। एवं णाणावरणीयवेयणाए विसेसाभावेण सामण्णरूवाए सामण्णं*विसेसाविणाभावि त्ति कट्टु तेरस पुच्छाओ परूविदाओ। (१)एदेणेव सुत्तेण सूचिदाओ अण्णाओ तेरसपदविसयपुच्छाओ वत्तव्वाओ। तं जहा- उक्कस्सा णाणावरणीयवेयणा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा, किमजहण्णा, किं सादिया, किमणादिया, किं धुवा, किमद्धुवा, किमोजा, किंजुम्मा, किमोमा, किं विसिट्ठा, किं णोम-णोविसिट्ठा त्ति बारस पुच्छाओ उक्कस्सपदस्स हवंति। एवं सेसपदाणं पि बारस पुच्छाओ पादेक्कं कायव्वाओ। एत्थ सव्वपुच्छासमासो एगूणसत्तरिसदमेत्तो। |१६९|। तम्हा एदम्हि देसामासियसुत्ते अण्णाणि तेरससुत्ताणि दट्ठव्वाणि त्ति।

उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा ॥ ४ ॥

एदं पि(२)देसामासियसुत्तं। तेणेत्थ सेसणवपदाणि वत्तव्वाणि। देसामासियत्तादो चेव सेसतेरससुत्ताणमेत्थ अंतब्भावो वत्तव्वो। तत्थ ताव पढमसुत्तपरूवणा कीरदे।

सूत्रमें ज्ञानावरण पदका ग्रहण करके शेष कर्मोंका प्रतिषेध किया है। द्रव्य, काल और भाव आदिका प्रतिषेध करनेके लिये क्षेत्रका निर्देश किया है। यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसलिये इसके द्वारा अन्य नौ पृच्छाएं सूचित की गई हैं। इस कारण ज्ञानावरणकी वेदना क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादिक है, क्या अनादिक है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या ओज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है और क्या नोम-नोविशिष्ट है, ऐसा कहना चाहिये। इस प्रकार सामान्य चूंकि विशेषका अविनाभावी है अतः विशेषका अभाव होनेसे सामान्य स्वरूप ज्ञानावरणीयवेदनाके विषयमें इन तेरह पृच्छाओंकी प्ररूपणा की गई है। इसी सूत्रसे सूचित अन्य तेरह पद विषयक पृच्छाओंको कहना चाहिये। यथा- उत्कृष्ट ज्ञानावरणवेदना क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादिक है, क्या अनादिक है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या ओज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, और क्या नोम-नोविशिष्ट है, ये बारह पृच्छाएं उत्कृष्ट पदके विषयमें होती है। इसी प्रकार शेष पदोंमेंसे भी प्रत्येक पदके विषयमें बारह पृच्छाएं करना चाहिये। यहां सब पृच्छाओंका जोड़ एक सौ उनत्तर (१६९) मात्र होता है। इसी कारण इस देशामर्शक सूत्रमें अन्य तेरह सूत्रोंको देखना चाहिये।

उक्त वेदना उत्कृष्ट भी है, अनुत्कृष्ट भी है, जघन्य भी है, और अजघन्य भी है ॥४॥

यह भी देशामर्शक सूत्र है। इसलिये यहां शेष नौ पदोंको कहना चाहिये। देशामर्शक होनेसे ही इस सूत्रमें शेष तेरह सूत्रोंका अन्तर्भाव कहना चाहिये। उनमें पहिले प्रथम सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है- ज्ञानावरणीयकी वेदना

---

* प्रतिषु 'सामण्ण' इति पाठः। (१) अ प्रतौ 'पुणो' इति पाठः (२) प्रतिषु 'एदं हि' इति पाठः।

तं जहा- णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो सिया उक्कस्सा, अट्ठ*-रज्जूण मुक्कमारणंतियमहामच्छम्मि उक्कस्सखेत्तुवलंभादो। सिया अणुक्कस्सा, अण्णत्थ अणुक्कस्सखेत्तदंसणादो। सिया जहण्णा, तिसमयआहारय-तिसमयतब्भवत्थसुहुमणिगोदम्हि जहण्णखेत्तुवलंभादो। सिया अजहण्णा, अण्णत्थ अजहण्णखेत्तदंसणादो। सिया सादिया, पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे सव्वखेत्ताणं सादित्तुवलंभादो। सिया अणादिया†, दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अणादित्तदंसणादो। सिया धुवा, दव्वट्ठियणयं पडुच्च णाणावरणीयखेत्तस्स सव्वलोगस्स धुवत्तुवलंभादो। सिया अद्धुवा, पज्जवट्ठियं पडुच्च अद्धुवत्तदंसणादो। सिया ओजा, कत्थ वि खेत्तविसेसे कलितेजोजसंखाविसेसाणमुवलंभादो। सिया जुम्मा, कत्थ वि खेत्तविसेसे कद-बादरजुम्माणं संखाविसेसाणमुवलंभादो। सिया ओमा, कत्थ वि खेत्तविसेसे परिहाणिदंसणादो। सिया विसिट्ठा, कत्थ वि वड्ढिदंसणादो। सिया णोम-णोविसिट्ठा, कत्थ वि वड्ढि-हाणीहि विणा खेत्तस्स अवट्ठाणदंसणादो | १३ |।

संपहि बिदियसुत्तत्थो उच्चदे। तं जहा- उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा जहण्णा‡ अणुक्कस्सा च ण होदि, पडिवक्खत्तादो। सिया अजहण्णा, जहण्णादो उवरिमासेसखेत्तवियप्पावट्ठिदे अजहण्णे उक्कस्सस्स वि संभवादो। सिया सादिया,

क्षेत्रकी अपेक्षा कथचित् उत्कृष्ट है, क्योंकि, आठ राजुओंमें मारणान्तिक समुद्घातको करनेवाले महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्र पाया जाता है। कथंचित् वह अनुत्कृष्ट है, क्योंकि महामत्स्यको छोड़कर अन्यत्र अनुत्कृष्ट क्षेत्र देखा जाता है। कथंचित् वह जघन्य है, क्योंकि, त्रिसमयवर्ती आहारक व त्रिसमयवर्ती तद्भवस्थ सूक्ष्म निगोद जीवके जघन्व क्षेत्र पाया जाता है। कथंचित् वह अजघन्य है, क्योंकि, उक्त सूक्ष्म निगोद जीवको छोड़कर अन्यत्र अजघन्य क्षेत्र देखा जाता है। कथंचित् वह सादिक है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका आश्रय करनेपर सब क्षेत्रोंके सादिता पायी जाती है। कथंचित् वह अनादिक है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका आश्रय करनेपर अनादिपना देखा जाता है, कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि. द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय कर्मका क्षेत्र जो सब लोक है वह ध्रुव देखा जाता है। कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा उक्त क्षेत्रके अध्रुवपना भी देखा जाता है। कथंचित् वह ओज है, क्योंकि, किसी क्षेत्रविशेषमें कलिओज और तेजोज संख्याविशेष पायी जाती हैं। कथंचित् वह युग्म है, क्योंकि, किसी क्षेत्रविशेषमें कृतयुग्म और बादरयुग्म ये विशेष संख्यायें पायी जाती हैं। कथंचित् वह ओम है, क्योंकि, किसी क्षेत्रविशेषमें हानि देखी जाती है। कथंचित् वह विशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर वृद्धि देखी जाती है। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर वृद्धि और हानिके विना क्षेत्रका अवस्थान देखा जाता है (१३)।

अब द्वितीय सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है– उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय-वेदना जघन्य और अनुत्कृष्ट नहीं है, क्योंकि, वे उसके प्रतिपक्षभूत हैं। कथंचित् वह अजघन्य भी है, क्योंकि, जघन्यसे ऊपरके समस्त विकल्पोंमें रहनेवाले अजघन्य पदमें उत्कृष्ट पद भी सम्भव है। कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट

* प्रतिषु 'अद्ध' इति पाठः। † ताप्रतौ 'अणादि' इति पाठः

‡ अ-काप्रत्योः 'अहण्णा अजहण्णा', ताप्रतौ 'जहण्णाजहण्णा' इति पाठः।

अणुक्कस्सादो उक्कस्सखेत्तुप्पत्तीए। सिया अध्दुवा, उक्कस्सपदस्स सव्वकालमवट्ठाणाभावादो। सिया कदजुम्मा, उक्कस्सखेत्तम्मि बादरजुम्म-कलि-तेजोजसंखा* -विसेसाणमणुवलंभादो। सिया णोम-णोविसिट्ठा, वड्ढिदे हाइदे च उक्कस्सत्तविरोहादो। एवं उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा पंचपदप्पिया † | ५ ||।

अणुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा सिया जहण्णा, उक्कस्सं मोत्तूण सेसहेट्ठिमासेसवियप्पे अणुक्कस्से जहण्णस्स (वि) संभवादो। सिया अजहण्णा, अणुक्कस्सस्स अजहण्णाविणाभावित्तादो। सिया सादिया, उक्कस्सादो अणुक्कस्सुप्पत्तीदो अणुक्कस्सादो ‡ वि अणुक्कस्सविसेसुप्पत्तिदंसणादो च। अणादिया ण होदि, अणुक्कस्स पदविसेसस्स विवक्खियत्तादो। अणुक्कस्ससामण्णम्मि अप्पिदे वि अणादिया ण होदि, उक्कस्सादो अणुक्कस्सपदपदिदं पडि सादित्तदंसणादो। ण च णिच्चणिगोदेसु अणादित्तं लब्भदि, तत्थ अणुक्कस्सपदाणं पल्लट्टणेण सादित्तुवलंभादो। सिया अध्दुवा अणुक्कस्सेक्कपदविसेसस्स सव्वदा अवट्ठाणाभावादो। सामण्णे अस्सिदे वि धुवत्तं णत्थि, अणुक्कस्सादो उक्कस्सपदं पडिवज्जमाणजीवदंसणादो। सिया ओजा, कत्थ वि पदविसेसे अवट्ठिददुविहविसमसंखुवलंभादो। सिया जुम्मा, कत्थ वि अणुक्कस्सपदविसेसे दुविहसमसंखदंसणादो। सिया ओमा, कत्थ

क्षेत्रसे उत्कृष्ट क्षेत्रकी उत्पत्ति है। कथंचित् वह अध्रुव भी है, क्योंकि उत्कृष्ट पद सर्वदा नहीं रहता। कथंचित् वह कृतयुग्म भी है। क्योंकि, उत्कृष्ट क्षेत्रमें बादरयुग्म, कलिओज और तेजोज रूप विशेष संख्यायें नहीं पायी जातीं। कथंचित् वह नोम--नोविशिष्ट भी है क्योंकि, वृद्धि और हानिके होनेपर उत्कृष्टपनेका विरोध है। इस प्रकार उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना पाच (पद) पद स्वरूप हैं।

अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् जघन्य है, क्योंकि उत्कृष्टको छोडकर शेष सब नीचेके विकल्प रूप अनुत्कृष्ट पदमें जघन्य पद भी सम्भव है। कथंचित् वह अजघन्य भी है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट अजघन्यका अविनाभावी है। कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, उत्कृष्ट पदसे अनुत्कृष्ट पदकी उत्पत्ति है, तथा अनुत्कृष्टसे भी अनुत्कृष्टविशेषकी उत्पत्ति देखी जाती है। वह अनादिक नहीं है, क्योंकि, यहां अनुत्कृष्ट पदविशेषकी विवक्षा है। अनुत्कृष्ट सामान्यकी विवक्षा करनेपर भी वह अनादि नहीं हो सकती, क्योंकि, उत्कृष्टसे अनुत्कृष्ट पदमें गिरनेकी अपेक्षा सादिपना देखा जाता है। यदि कहा जाय कि नित्य निगोद जीवोंमें उसका अनादिपना पाया जाता है, सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उनमें भी अनुत्कृष्ट पदोंके पलटनेसे सादिपना पाया जाता हैं। कथंचित् वह अध्रुव भी है, क्योंकि, सर्वदा एक अनुत्कृष्ट पदविशेष रह नहीं सकता। सामान्यका आश्रय करनेपर भी ध्रुवपना सम्भव नहीं है, क्योंकि, अनुत्कृष्टसे उत्कृष्ट पदको प्राप्त होनेवाले जीव देखे जाते हैं। कथंचित् वह ओज भी हैं, क्योंकि किसी पदविशेषमें अवस्थित दोनों प्रकारकी विषम संख्या पायी जाती है। कथंचित् वह युग्म भी है, क्योंकि, किसी अनुत्कृष्ट पदविशेषमें दोनों प्रकारकी सम संख्या देखी जाती हैं। कथंचित् वह

* प्रतिषु 'संका' इति पाठः। † ताप्रतौ 'पंचपदंसिया' इति पाठः ‡ ताप्रतौ 'अणुक्क (स्सा) दो' इति पाठः।

वि हाणीदो * समुप्पण्णअणुक्कस्सपदुवलंभादो। सिया विसिट्ठा, कत्थ वि वड्ढीदो अणुक्कस्सपदुवलंभादो। सिया णोम-णोविसिट्ठा, अणुक्कस्स-जहण्णम्मि अणुक्कस्स-पदविसेसे वा अप्पिदे वड्ढि-हाणीणमभावादो। एवं णाणावरणाणुक्कस्सवेयणा णवपदप्पिया | ९ |। एवं तदियसुत्तपरूवणा कदा।

संपहि चउत्थसुत्तपरूवणा कीरदे। तं जहा- जहण्णा णाणावरणीयवेणा सिया अणुक्कस्सा, अणुक्कस्सजहण्णस्स ओघजहण्णेण विसेसाभावादो। सिया सादिया अजहण्णादो जहण्णपदुप्पत्तीए। सिया अद्धुवा, सासदभावेण ۞ अवट्ठाणाभावादो। अणादिय-धुवपदाणि णत्थि, जहण्णक्खेत्तविसेसम्मि अणादिय-धुवत्ताणुवलंभादो। सिया जुम्मा चदुहि अवहिरिज्जमाणे णिरग्गत्तदंसणादो। सिया णोम-णोविसिट्ठा, तत्थ वड्ढि-हाणीणमभावादो। एवं जहण्णक्खेत्तवेयणा पंचपयारासरूवेण छप्पयारा वा | ५ |। एवं चउत्थसुत्तपरूवणा कदा।

संपहि पंचमसुत्तपरूवणा कीरदे। तं जहा- अजहण्णा णाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, अजहण्णुक्कस्सस्स ओघुक्कस्सादो पुधत्ताणुवलंभादो। सिया अणुक्कस्सा, तदविणाभावादो। सिया सादिया, पल्लट्टणेण विणा अजहण्णपदविसेसाणमवट्ठाणाभावादो। सिया अद्धुवा। कारणं सुगमं। सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा।

ओम भी है, क्योंकि, कहींपर हानिसे भी उत्पन्न अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है। कथंचित् वह विशिष्ट भी है, क्योंकि, कहींपर वृद्धिसे अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट भी है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट जघन्यमें अथवा अनुत्कृष्ट पदविशेषकी विवक्षा करनेपर वृद्धि और हानि नहीं पायी जाती है। इस प्रकार ज्ञानावरणकी अनुत्कृष्ट वेदना नौ (९) पदात्मक है। इस प्रकार तीसरे सूत्रकी अर्थप्ररूपणा की गई है।

अब चतुर्थ सूत्रकी अर्थप्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है--जघन्य ज्ञानावरणीय-वेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट जघन्य ओघजघन्यसे भिन्न नहीं है। कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, अजघन्यसे जघन्य पद उत्पन्न होता है। कथंचित् वह अध्रुव भी है, क्योंकि, उसका सर्वदा अवस्थान नहीं रहता। अनादि और ध्रुव पद उसके नहीं हैं, क्योंकि, जघन्य क्षेत्रविशेषमें अनादि एवं ध्रुवपना नहीं पाया जाता। कथंचित् वह युग्म है, क्योंकि, उसे चारसे अपहृत करनेपर शेष कुछ नहीं रहता। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है क्योंकि उसमें वृद्धि और हानिका अभाव है। इस प्रकार जघन्य क्षेत्रवेदना पांच (५) प्रकार अथवा अपने रूपके साथ छह प्रकार है। इस प्रकार चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा की है।

अब पांचवे सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- अजघन्य ज्ञाना-वरणीय वेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, क्योंकि, अजघन्य उत्कृष्ट ओघउत्कृष्टसे पृथक् नहीं पाया जाता। कथंचित् वह अनुत्कृष्ट भी है, क्योंकि वह उसका अविनाभावी है। कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, पलटनेके विना अजघन्य पदविशेषोंका अवस्थान नहीं है। कथंचित् वह अध्रुव भी है। इसका कारण सुगम है। कथंचित् वह ओज भी है, युग्म भी है, ओम भी है, और विशिष्ट भी है। इसका कारण सुगम

---

* ताप्रतौ 'कथं ? हाणीदो' इति पाठः। ۞ ताप्रतौ 'सासदामावेण' इति पाठः।

सुगमं। सिया णोम-णोविसिट्ठा, णिरुद्धपदविसेसादो। एवमजहण्णा णवभंगा दसभंगा वा |९-१०|। एसो पंचमसुत्तत्थो।

सादिया णाणावरणवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया अध्दुवा। ण (अणादिया)। सिया ध्दुवा, सादियस्स अणादिय-धुवत्तविरोहादो। सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा। एवं सादियवेयणाए दस भंगा एक्कारस भंगा वा |१०-११|। एसो छट्ठसुत्तत्थो।

अणादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया। कधमणादियवेयणाए सादित्तं꙳? ण, वेयणाएसामण्णा-वेक्खाए अणादियम्मि उक्कस्सादिपदावेक्खाए सादियत्तविरोहाभावादो। सिया धुवा वेयणा, सामण्णस्स विणासाभावादो✽। सिया अध्दुवा, पदविसेसस्स विणासदंसणादो। अणादियत्ताम्मि सामण्णविवक्खाए समुप्पण्णम्मि कधं पदविसेससंभवो? ण, सगंतो-क्खित्तअसेसविसेसम्मि सामण्णम्मि अप्पिदे तदविरोहादो। सिया ओजा, सिया जुम्मा,

---

है। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट भी है क्योंकि, यहां पदविशेषकी विवक्षा है। इस प्रकार अजघन्य वेदनाके नौ (९-१०) या दस भंग होते हैं। यह पांचवें सूत्रका अर्थ है।

सादिकज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, और कथंचित् अध्रुव भी है वह (अनादि व) ध्रुव नही है, क्योंकि, सादि पदके अनादि व ध्रुव होनेका विरोध है। कथंचित् वह ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है। इस प्रकार सादि वेदनाके (१०-११) भंग अथवा ग्यारह भंग होते हैं। यह छटे सूत्रका अर्थ है।

अनादिज्ञानावरणवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य और कथंचित् सादिक भी है।

शंका -- अनादि वेदना सादि कैसे हो सकती है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि सामान्यकी अपेक्षा वेदनाके अनादि होनेपर भी उत्कृष्ट आदि पदविशेषोंकी अपेक्षा उसके सादि होनेमें कोई विरोध नहीं है।

कथंचित् वह वेदना ध्रुव है, क्योंकि, सामान्यका कभी विनाश नहीं होता। कथंचित् वह अध्रुव भी है, क्योंकि, पदविशेषका विनाश देखा जाता है।

शंका -- सामान्य विवक्षासे अनादित्वके होनेपर पदविशेषकी सम्भावना ही कैसे हो सकती है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, अपने भीतर समस्त विशेषोंको रखनेवाले सामान्यकी विवक्षा होनेपर उसमें कोई विरोध नहीं है।

कथंचित् वह ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और

꙳ अ-आ प्रत्यो: 'सादियत्तं' इति पाठः। ✽ ताप्रतौ 'वि णासाभावादो' इति पाठः

सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवमणादिया वेयणा बारस-भंगा तेरसभंगा वा । १२-१३ । । एसो सत्तमसुत्तत्थो ।

धुवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवं धुवपदस्स बारस भंगा तेरस भंगा वा । १२-१३ । । एसो अट्ठमसुत्तत्थो ।

अद्धुवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवमद्धुवपदस्स दस भंगा एक्कारस भंगा वा । १०-११ । । एसो णवमसुत्तत्थो ।

ओजणाणावरणीयवेयणा उक्कस्स-जहण्णपदेसु णत्थि, कदजुम्मे तेसिमवट्ठाणादो । तदो सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया । सिया अणादिया । कुदो? सामण्णविवक्खादो । सिया धुवा, सामण्णविवक्खादो चेव । सिया अद्धुवा, विसेस-विवक्खाए । दव्वविहाणे अणादिय-धुवत्तं किण्ण परूविदं ? ण, तत्थ सामण्ण-

---

कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है । इस प्रकार अनादिवेदनाके बारह (१२-१३) भंग अथवा तेरह भंग होते हैं । यह सातवें सूत्रका अर्थ है ।

ध्रुवज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है । इस प्रकार ध्रुव पदके बारह (१२-१३) अथवा तेरह भंग होते हैं । यह आठवें सूत्रका अर्थ है ।

अध्रुवज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है । इस प्रकार अध्रुव पदके दस (१०-११) अथवा ग्यारह भंग होते हैं । यह नौवें सूत्रका अर्थ है ।

ओजज्ञानावरणीयवेदना उत्कृष्ट और जघन्य पदोंमें नहीं होती, क्योंकि, उनका अवस्थान कृतयुग्म राशिमें है । इसलिये वह कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य व कथंचित् सादि है । वह कथंचित् अनादि भी है, क्योंकि, सामान्यकी विवक्षा है । कथंचित् वह ध्रुव भी है, क्योंकि, उसी सामान्यकी ही विवक्षा है । कथंचित् वह विशेषकी विवक्षासे अध्रुव भी है ।

शंका- द्रव्यविधानमें अनादि और ध्रुव पदोंकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

विवक्खाभावादो। सामण्णविवक्खाए पुण संतीए तत्थ वि एदे दो भंगा वत्तव्वा। सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा। एवमोजस्स णव भंगा दस भंगा वा। ९-१०।। एसो दसमसुत्तत्थो।

जुम्मणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा। एवं जुम्मस्स एक्कारस बारस भंगा वा। ११-१२।। एसो एक्कारसम✱सुत्तत्थो।

ओमणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया। सिया अणादिया, ओमत्तसामण्णविवक्खाए। सिया धुवा तेणेव कारणेण। सिया अद्धुवा। सामण्णविवक्खाए अभावेण☮ दव्वविहाणे ओमस्स अणादिय धुवत्तं ण परूविदं। सिया ओजा, सिया जुम्मा। एवमोमपदस्स अट्ठ णव भंगा वा। ८-९।। एसो बारसमसुत्तत्थो।

विसिट्ठणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा। एवं विसिट्ठपदस्स अट्ठ भंगा णव भंगा वा। ८-९।। एसो तेरसमसुत्तत्थो।

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वहां सामान्यकी विवक्षाका अभाव है। यदि सामान्यकी विवक्षा अभीष्ट हो तो वहां भी इन दो पदोंको कहना चाहिये।

वह कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है। इस प्रकार ओज पदके नौ (९-१०) भंग अथवा दस भंग होते हैं। यह दसवें सूत्रका अर्थ है।

युग्मज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है। इस प्रकार युग्म पदके ग्यारह (११-१२) अथवा बारह भंग होते हैं। यह ग्यारहवें सूत्रका अर्थ है।

ओम ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य व कथंचित् सादि भी है। वह कथंचित् अनादि भी है, क्योंकि, ओमत्व सामान्यकी विवक्षा है। इसी कारणसे वह कथंचित् ध्रुव भी है। कथंचित् वह अध्रुव भी है। सामान्यकी विवक्षा न होनेसे द्रव्यविधानमें ओमके अनादि और ध्रुव पद नहीं कहे गये हैं। वह कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म भी है। इस प्रकार ओमके आठ पदके आठ (८-९) अथवा नौ भंग होते हैं। यह बारहवें सूत्रका अर्थ है।

विशिष्टज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म भी है। इस प्रकार विशिष्ट पदके आठ (८-९) अथवा नौ भंग होते हैं। यह तेरहवें सूत्रका अर्थ है।

✱ ताप्रतौ 'एक्कारस' इति पाठः। ☮ ताप्रतौ 'सिया अद्धुवा सामण्णविवक्खाए अभावेण।' इति पाठः।

णोम-णोविसिट्ठा णाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया। सिया अणादिया। कुदो ? णोम-णोविसिट्ठत्तविवक्खाए। सिया धुवा तेणेव कारणेण। सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा। एवं दस भंगा एक्कारस भंगा वा। १०-११।। एसो चोद्दसमसुत्तत्थो।

एदेसिं भंगाणमंकविण्णासो ।१३।५।९।५।९।१०।१२।१०। ९।१०।८।८♠ ।८।१०।।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ।। ५ ।।

जहा णाणावरणीयस्स पदमीमांसा कदा तहा सेससत्तण्णं कम्माणं पदमीमांसा कायव्वा। ❋एवमंतोखित्तोजाणुयोगद्दारपदमीमांसा समत्ता।

सामित्तं दुविहं जहण्णपदे उक्कस्सपदे ।। ६ ।।

तत्थ जहण्णं चउव्विहं णाम-ट्ठवणा-दव्व-भावजहण्णमिदि। णामजहण्णं ट्ठवणा-जहण्णं च सुगमं। दव्वजहण्णं दुविहं आगमदव्वजहण्णं णोआगमदव्वजहण्णं चेदि। तत्थ जहण्णपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वजहण्णं। णोआगमदव्वजहण्णं

नोम-नोविशिष्टज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य व कथंचित् सादि भी है। कथंचित् वह अनादि भी है, क्योंकि, नोम-नोविशिष्ट सामान्यकी विवक्षा है। इसी कारणसे वह कथंचित् ध्रुव भी है। वह कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म भी है। इस प्रकार नोम-नोविशिष्ट पदके दस (१०-११) भंग अथवा ग्यारह भंग होते हैं। वह चौदहवें सूत्रका अर्थ है।

इन भंगोंका अंकविन्यास इस प्रकार है - १३+५+९+५+९+१०+१२+१०+९+१०+८+८+१० = १३१।

इसी प्रकार सात कर्मोंकी पदमीमांसा सम्बन्धी प्ररूपणा करना चाहिये। ५।

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयकी पदमीमांसा की है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी पदमीमांसा करना चाहिये। इस प्रकार ओजानुयोगद्वारगर्भित पदमीमांसा समाप्त हुई।

स्वामित्व दो प्रकार है - जघन्य पदरूप और उत्कृष्ट पदरूप।। ६ ।।

उनमें जघन्य पद चार प्रकार है - नामजघन्य, स्थापनाजघन्य, द्रव्यजघन्य और भावजघन्य। इनमें नामजघन्य और स्थापनाजघन्य सुगम है। द्रव्यजघन्य दो प्रकार है - आगमद्रव्यजघन्य और नोआगमद्रव्यजघन्य। इनमें जघन्य प्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यजघन्य कहा जाता है। नोआगमद्रव्यजघन्य

♠ ताप्रतौ १०।१२।१०।९।१०।८। इति पाठः। ❋ प्रतिषु 'एवमंतोखेत्तो-' इति पाठः।

तिविहं, जाणुगसरीर भविय-तव्वदिरित्तणोआगमदव्वजहण्णभेदेण । जाणुगसरीरं भवियं गदं । तव्वदिरित्तं णोआगमदव्वजहण्णं दुविहं– ओघजहण्णमादेसेण जहण्णं चेदि । तत्थ ओघजहण्णं चउव्विहं– दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वजहण्णमेगो परमाणू । खेत्तजहण्णं दुविहं कम्म-णोकम्मखेत्तजहण्णभेदेण । तत्थ सुहुमणिगोदस्स जहण्णिया ओगाहणा कम्मखेत्तजहण्णं । णोकम्मखेत्तजहण्णमेगो आगासपदेसो । कालजहण्णमेगो समओ । भावजहण्णं परमाणुम्हि णिद्धत्तादिगुणो । आदेसजहण्णं पि दव्व-खेत्त-कालभावभेदेहि चउव्विहं । तत्थ दव्वदो आदेसजहण्णं उच्चदे । तं जहा– तिपदेसियं खंधं दट्ठूण दुपदेसियखंधो आदेसदो दव्वजहण्णं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । तिपदेसोगाढदव्वं दट्ठूण दुपदेसोगाढदव्वं खेत्तदो आदेसजहण्णं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । तिसमयपरिणदं दट्ठूण दुसमयपरिणदं दव्वमादेसदो काल-जहण्णं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । तिगुणपरिणदं दव्वं दट्ठूण दुगुणपरिणदं दव्वं भावदो आदेसजहण्णं ।

भावजहण्णं दुविहं आगम-णोआगमभावजहण्णभेदेण । तत्थ जहण्णपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावजहण्णं । सुहुमणिगोदजीवलद्धिअपज्जत्तयस्स जं सव्वजहण्ण णाणं तं

तीन प्रकार है–– ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त । इनमें ज्ञायकशरीर और भावी अवगत हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यजघन्य दो प्रकार है–– ओघजघन्य और आदेशजघन्य । इनमें ओघजघन्य द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है । उनमें द्रव्यजघन्य एक परमाणु है । क्षेत्रजघन्य कर्मक्षेत्रजघन्य और नोकर्मक्षेत्रजघन्यके भेदसे दो प्रकार है । उनमें सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहना कर्मक्षेत्रजघन्य है । नोकर्मक्षेत्रजघन्य एक आकाशप्रदेश है । एक समय कालजघन्य है । परमाणुमें रहनेवाला स्निग्धत्व आदि गुण भावजघन्य है ।

आदेशजघन्य भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके भेदसे चार प्रकार है । उनमें द्रव्यसे आदेशजघन्यको बतलाते हैं । वह इस प्रकार है – तीन प्रदेशवाले स्कन्धको देखकर दो प्रदे-शवाला स्कन्ध आदेशसे द्रव्यजघन्य है । इसी प्रकार शेष स्कन्धोंमें (चार प्रदेशवालेकी अपेक्षा तीन प्रदेशवाला, पांच प्रदेशवालेकी अपेक्षा चार प्रदेशवाला स्कन्ध इत्यादि) भी ले जाना चाहिये । तीन प्रदेशोंको अवगाहनकरनेवाले द्रव्यकी अपेक्षा दो प्रदेशोंको अवगाहन करनेवाला द्रव्य क्षेत्रकी अपेक्षा आदेशजघन्य है । इसी प्रकार शेष प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये । तीन समय परिणत द्रव्यको देखकर दो समय परिणत द्रव्य आदेशसे कालजघन्य है । इसी प्रकार शेष समयोंमें भी ले जाना चाहिये । तीन गुण परिणत द्रव्यको देखकर दो गुण परिणत द्रव्य भावसे आदेशजघन्य है ।

भावजघन्य आगमभावजघन्य और नोआगमभावजघन्यके भेदसे दो प्रकार है । उनमें जघन्य प्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावजघन्य है । सूक्ष्म निगोद जीव लब्ध्य-पर्याप्तकका जो सबसे जघन्य ज्ञान है वह नोआगमगभावजघन्य है ।

✻ प्रतिषु 'णिव्वत्तादिगुणो' इति पाठः ।

णोआगमभावजहण्णं । एत्थ ओघजहण्णखेत्तेण पयदं, णाणावरणीयखेत्तेसु सव्वजहण्णखेत्तगहणादो । सव्वजहण्णखेत्तमेगो आगासपदेसो त्ति एत्थ ण घेत्तव्वं, णाणावरणीयखेत्तेसु तदभावादो ।

उक्कस्सं चउव्विहं णाम-ट्ठवणा-दव्व-भावुक्कस्सभेएण । तत्थ णाम-ट्ठवणुक्कस्साणि सुगमाणि । दव्वुक्कस्सं दुविहं आगम-णोआगमदव्वुक्कस्सभेएण । तत्थ उक्कस्सपाहुडजाणगो अणुवजुत्तो आगमदव्वुक्कस्सं । णोआगमदव्वुक्कस्सं तिविहं जाणुगसरीर-भवियतव्वदिरित्तणोआगमदव्वुक्कस्सभेदेण । जाणुगशरीर-भवियणोआगमदव्वुक्कस्साणि सुगमाणि । तव्वदिरित्तणोआगमदव्वुक्कस्सं दुविहं ओघुक्कस्समादेसुक्कस्सं चेदि । तत्थ ओघुक्कस्सं चउविहं दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वदो उक्कस्सं महाखंधो । खेत्तुक्कस्सं दुविहं कम्मक्खेत्तं णोकम्मखेत्तमिदि । कम्मखेत्तुक्कस्सं लोगागासं । णोकम्मक्खेत्तुक्कस्सं आगासदव्वं । कालदो उक्कस्समणंता लोगा । भावदो उक्कस्सं सव्वुक्कस्सवण्ण-गंध-रस-पासा । आदेसुक्कस्सं पि चउव्विहं- दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वदो एग— परमाणुं दट्ठूण दुपदेसियक्खंधो आदेसुक्कस्सं । दुपदेसियखंधं दट्ठूण तिपदेसियक्खंधो वि आदेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । खेत्तदो एगक्खेत्तं दट्ठूण

यहां ओधजघन्य क्षेत्र प्रकृत है, क्योंकि, ज्ञानावरणीयके क्षेत्रोंमें सर्वजघन्य क्षेत्रका ग्रहण है । यहां सर्वजघन्य क्षेत्ररूप एक आकाशप्रदेशको नहीं लेना चाहिये, क्योंकि, ज्ञानावरणीयके क्षेत्रोंमें उसका (सर्वजघन्य क्षेत्रका) अभाव है ।

उत्कृष्ट नामउत्कृष्ट, स्थापनाउत्कृष्ट, द्रव्यउत्कृष्ट और भावउत्कृष्टके भेदसे चार प्रकार है । उनमें नामउत्कृष्ट और स्थापनाउत्कृष्ट सुगम है । द्रव्यउत्कृष्ट आगमद्रव्यउत्कृष्ट और नोआगमद्रव्यउत्कृष्टके भेदसे दो प्रकार है । उनमें उत्कृष्ट प्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यउत्कृष्ट है । नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यउत्कृष्टके भेदसे तीन प्रकार है । इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट सुगम हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट दो प्रकार है – ओघउत्कृष्ट और आदेशउत्कृष्ट । इनमें ओघउत्कृष्ट द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है । उनमें द्रव्यसे उत्कृष्ट महास्कंध है । क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट दो प्रकार है – कर्मक्षेत्र और नोकर्मक्षेत्र । लोकाकाश कर्मक्षेत्रउत्कृष्ट है । आकाश द्रव्य नोकर्मक्षेत्रउत्कृष्ट है । अनन्त लोक कालसे उत्कृष्ट हैं । भावसे उत्कृष्ट सर्वोत्कृष्ट वर्ण गन्ध, रस और स्पर्श हैं ।

आदेशउत्कृष्ट भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है । इनमें एक परमाणुको देखकर दो प्रदेशवाला स्कन्ध द्रव्यसे आदेशउत्कृष्ट है । दो प्रदेशवाले स्कन्धको देखकर तीन प्रदेशवाला स्कन्ध भी आदेश उत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष स्कन्धोंमें भी ले जाना चाहिये । क्षेत्रकी अपेक्षा एक क्षेत्रप्रदेशको देखकर दो क्षेत्रप्रदेश

दोक्खेत्तपदेसा आदेसदो उक्कस्सं खेत्तं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । कालदो एगसमयं दट्ठूण दोसमया आदेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । भावदो एगगुणजुत्तं दट्ठूण दुगुणजुत्तं दव्वमादेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । भावुक्कस्सं दुविहं-- आगम-णोआगमभावुक्कस्सभेदेण । तत्थ उक्कस्सपाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभावुक्कस्सं । णोआगमभावुक्कस्सं केवलणाणं । एत्थ ओघखेत्तुक्कस्सेण अहियारो, अप्पिदकम्म-खेत्तेसु उक्कस्सखेत्तग्गहणादो । ओघुक्कस्समागासदव्वं, तस्स गहणं किण्ण कदं ? ण, कम्मक्खेत्तेसु तदभावादो । एगं सामित्तं जहण्णपदे, अण्णेगमुक्कस्सपदे, एवं दुविहं चेव सामित्तं होदि; अण्णस्सासंभवादो ।

सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो उक्कस्सिया कस्स ? ॥ ७ ॥

जहण्णपदपडिसेहट्ठं उक्कस्सपदणिद्देसो कदो । णाणावरणग्गहणं सेसकम्मप-डिसेहफलं । खेत्तग्गहणं दव्वादिपडिसेहफलं । पुव्वाणुपुव्विं मोत्तूण पच्छाणुपुव्वीए उक्कस्सखेत्तस्स परूवणा किमट्ठं कीरदे ? ण, महल्लपरिवाडीए परूवणट्ठं कीरदे ।

आदेशकी अपेक्षा उत्कृष्ट क्षेत्र हैं । इसी प्रकार शेष प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये । कालकी अपेक्षा एक समयको देखकर दो समय आदेशउत्कृष्ट हैं । इसी प्रकार शेष समयोंमें भी ले जाना चाहिये । भावकी अपेक्षा एक गुण युक्त द्रव्यको देखकर दो गुण युक्त द्रव्य आदेश-उत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष गुणोंमें भी ले जाना चाहिये ।

भावउत्कृष्ट आगमभावउत्कृष्ट और नोआगमभावउत्कृष्ट भेदसे दो प्रकार है । उनमें उत्कृष्ट प्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावउत्कृष्ट है । नोआगमभाव-उत्कृष्ट केवलज्ञान है । यहां ओघक्षेत्रउत्कृष्टका अधिकार है, क्योंकि, विवक्षित कर्मक्षेत्रोंमें उत्कृष्ट क्षेत्रका ग्रहण किया गया है ।

शंका-- ओघउत्कृष्ट आकाश द्रव्य है, उसका ग्रहण क्यों नहीं किया ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, कर्मक्षेत्रोंमें आकाशद्रव्यका अभाव है ।

एक स्वामित्व जघन्य पदमें और दूसरा एक उत्कृष्ट पदमें, इस प्रकारसे दो प्रकारका ही स्वामित्व है, क्योंकि, इनके अतिरिक्त अन्य स्वामित्वकी सम्भावना नहीं है ।

स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें ज्ञानावरणीयवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके होती है ? ॥ ७ ॥

जघन्य पदके प्रतिषेधके लिये सूत्रमें उत्कृष्ट पदका निर्देश किया है । ज्ञानावरणका ग्रहण शेष कर्मोंका प्रतिषेध करता है । क्षेत्र पदके ग्रहणका फल द्रव्य आदिका प्रतिषेध करना है ।

शंका-- पूर्वानुपूर्वीको छोडकर पश्चादानुपूर्वीसे उत्कृष्ट क्षेत्रकी प्ररूपणा किसलिये की जाती है ?

जो मच्छो जोयणसहस्सिओ सयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तडे अच्छिदो ॥ ८ ॥

जो मच्छो जोयणसहस्सिओ त्ति एदेण सुत्तवयणेणंगुलस्स *असंखेज्जदिभाग-मादिं कादूण जा उक्कस्सेण पदेसूणजोयणसहस्सं त्ति आयामेण जे ट्ठिदा मच्छा तेसिं पडिसेहो कदो । उस्सेह-विक्खंभेहि महामच्छासरिसलद्धमच्छेसु गहिदेसु वि ण कोवि दोसो अत्थि, तदो तेसिं गहणं किण्ण कीरदे ? ण एस दोसो, महामच्छायाम-विक्खं-भुस्सेहेसु अणवगएसु लद्ध✿मच्छायामविक्खंभुस्सेहाणं अवगमोवायाभावादो । ण महामच्छायामो अण्णदो अवगम्मदे, सुत्तभूदस्स एदम्हादो जेट्ठस्स अण्णस्सासंभवादो । महामच्छस्स आयामो जोयणसहस्सं १००० । एदस्स विक्खंभुस्सेहा केत्तिया होंति त्ति उत्ते, उच्चदे - एसो महामच्छो पंचजोयण-सदविक्खंभो ५०० पंचासुत्तरबेसदुस्सेहो २५० । सुत्तेण विणा कधमेदं णव्वदे ?

समाधान– नहीं, महान् परिपाटीसे प्ररूपणा करनेके लिये पश्चादानुपूर्वीसे प्ररूपणा की जा रही है । अर्थात् (उद्देश्यके अनुसार यद्यपि पहिले जघन्य पदकी प्ररूपणा करना चाहिये थी, तथापि विस्तृत होनेसे पहिले उत्कृष्ट पदकी प्ररूपणा की जा रही है ।)

जो मत्स्य एक हजार योजनकी अवगाहनावाला स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य तटपर स्थित है ॥ ८ ॥

'जो मत्स्य एक हजार योजनकी अवगाहनावाला है' इस सूत्रांशसे, जो मत्स्य अंगुलके असंख्यातवें भागको आदि लेकर उत्कर्षसे एक प्रदेश कम हजार योजन प्रमाण तक आयामसे स्थित हैं, उनका प्रतिषेध किया गया है ।

शंका– उत्सेध और विष्कम्भकी अपेक्षा महामत्स्यके सदृश पाये जानेवाले मत्स्योंका ग्रहण करनेपर भी कोई दोष नहीं है, अतः उनका ग्रहण क्यों नहीं करते ?

समाधान– यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जब तक महामत्स्यके आयाम विष्कम्भ और उत्सेधका परिज्ञान न हो जावें तब तक प्राप्त मत्स्योंके आयाम, विष्कम्भ और उत्सेधका परिज्ञान होना किसी प्रकारसे सम्भव नहीं है । महामत्स्यका आयाम किसी अन्य सूत्रसे नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस सूत्रसे ज्येष्ठ प्राचीन सूत्रभूत कोई अन्य वाक्य सम्भव नहीं है ।

महामत्स्यका आयाम एक हजार (१०००) योजन प्रमाण है । इसके विष्कम्भ और उत्सेधका प्रमाण कितना है, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि उस महामत्स्यका विष्कम्भ पांच सौ (५००) योजन और उत्सेध दो सौ पचास (२५०) योजन मात्र है ।

शंका– यह सूत्रके विना कैसे जाना जाता है ?

---

* आ-प्रतौ 'संखेज्जदि' इति पाठः ।

✿ अ-प्रतौ 'बंदमच्छोयाम' इति पाठः । आप्रतौ 'लंदमच्छायाम' इति पाठः ।

आइरियपरंपरागयपयवा⊗इज्जंतुवदेसादो। ण च महामच्छविक्खंभुस्सेहाणं सुत्तं णत्थि चेवे त्ति णियमो, देसामासिएण 'जोयणसहस्सिओ' त्ति उत्तेण सूचिदत्तादो। एदे विक्खंभुस्सेहा महामच्छस्स सव्वत्थ सरिसा। मुह-पुच्छेसु विक्खंभुस्सेहाणं पमाणमेत्तियं होदि त्ति, एदेहिंतो पुधभूदविक्खंभुस्सेहाणं परूवयसुत्त-वक्खाणाणमणुवलंभादो जोयणसहस्सणिद्देसंण्णहाणुववत्तीदो च।

के वि आइरिया महामच्छो मुह-पुच्छेसु सुट्ठु सण्हओ त्ति भणंति। एत्थतणमच्छे दट्ठूण एदं ण घडदे, कहल्लिमच्छंगेसु✽ वियहिचारदंसणादो। अधवा एदे विक्खंभुस्सेहा समकरणसिद्धा त्ति के वि आइरिया भणंति। ण च सुट्ठु सण्णमुहो महामच्छो अणेग☼-जोयणसदोगाहणतिमिंगिलादिगिलणखमो, विरोहादो। तम्हा वक्खाणम्मि उत्तविक्खंभुस्सेहा चेव महामच्छस्स घेत्तव्वा। अधवा मज्झपदेसे चेव उत्तविक्खंभुस्सेहो मच्छो घेत्तव्वो, आदिमज्झवसाणेसु एदम्हादो तिगुणं विपुंजमाणस्स❋ उक्कस्सखेत्तुप्पत्ति पडि विरोहाभावादो। 'सयंभुरमणसमुद्दस्से' त्ति सव्वदीव-समुद्दबाहिरसमुद्दस्स गहणट्ठं।

समाधान -- वह आचार्यपरम्पराके प्रवाह स्वरूपसे आये हुए उपदेशसे जाना जाता है। और महामत्स्यके विष्कम्भ व उत्सेधका ज्ञापक सूत्र है ही नहीं, ऐसा नियम भी नहीं है, क्योंकि, 'जोयणसहस्सिओ त्ति' अर्थात् एक हजार योजनवाला इस देशामर्शक सूत्रवचनसे उनकी सूचना की गई है।

ये विष्कम्भ और उत्सेध महामत्स्यके सब जगह समान हैं। मुख और पूंछमें विष्कम्भ एवं उत्सेधका प्रमाण इतने मात्र हो है, क्योंकि, इनसे भिन्न विष्कम्भ और उत्सेधकी प्ररूपणा करनेवाला सूत्र व व्याख्यान पाया नहीं जाता, तथा इसके विना हजार योजनका निर्देश बनता भी नहीं है।

महामत्स्य मुख और पूंछमें अतिशय सूक्ष्म है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। किंतु यहांके मत्स्योंको देखकर यह घटित नहीं होता, तथा कहीं कहीं मत्स्योंके अंगोंमें व्यभिचार देखा जाता है। अथवा, ये विष्कम्भ और उत्सेध समकरणसिद्ध हैं, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। दूसरी बात यह है कि अतिशय सूक्ष्म मुखसे संयुक्त महामत्स्य अनेक योजनकी अवगाहनावाले अन्य तिमिंगल आदि मत्स्योंके निगलनेमें समर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि, इसमें विरोध आता है। अत एव व्याख्यानमें महामत्स्यके उपर्युक्त विष्कम्भ और उत्सेधको ही ग्रहण करना चाहिये।

अथवा, उक्त विष्कम्भ और उत्सेध महामत्स्यके मध्य प्रदेशमें ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि आदि, मध्य और अन्तमें इससे तिगुणे फैलनेवालेके उत्कृष्ट क्षेत्रकी उत्पत्तिके प्रति कोई विरोध नहीं है।

'सयंभूरमणसमुद्दस्स' इस पदके द्वारा द्वीप-समुद्रोंमें सबसे बाह्य समुद्रका ग्रहण किया गया है।

⊗ अ-प्रतौ 'पणइज्जंतु' इति पाठः। ✽ प्रतिषु 'मच्छाओसु' इति पाठः। ☼ मुद्रितप्रतौ 'अण्णेग' इति पाठः। ❋ आ-प्रतौ 'विफुज्जमाणस्स' इति पाठः।

सव्वबाहिरो समुद्दो चेव होदि त्ति कधं णव्वदे ? सयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरे✲ दीवे अच्छिदो त्ति अभणिय 'सयंभुरमणसमुद्दस्स बहिरिल्लए तडे अच्छिदो' त्ति सुत्तादो णव्वदे ? सगबाहिरवेइयाए पेरंतो त्ति सयंभुरमणसमुद्दो, तस्स बाहिरिल्लतडो णाम समुद्दपरभूमागदेसो । तत्थ अच्छिदो त्ति घेत्तव्वं। सयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लतडो णाम तदवयवभूदबाहिरवेइया तत्थ महामच्छो अच्छिदो त्ति के वि आइरिया भणंति । तण्ण घडदे, 'कायलेस्सियाए लग्गो⊛' त्ति उवरि भण्णमाणसुत्तेण सह विरोहादो । ण च सयंभुरमणसमुद्दबाहिरवेइयाए संबद्धा तिण्णि वि वादवलया, तिरियलोगविक्खंभस्स एगरज्जुपमाणादो ऊणत्तप्पसंगादो । तं कधं णव्वदे ? जंबूदीवजोयणलक्ख-विक्खंभदो दुगुणक्कमेण गदसव्वदीव-सागरविक्खंभेसु मेलाविदेसु जगसेडीए सत्तम-भागाणुप्पत्तीदो। तं पि कधं णव्वदे ? रूवाहियदीव सागररूवाणि विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थं कादूण तत्थ तिण्णि रूवाणि अवणिय जोयणलक्खेण गुणिदे दीवसमुद्दरु-द्धतिरियलोगखेत्तायामुप्पत्तीदो । ण च एत्तियो चेव तिरियलोगविक्खंभो, जगसेडीए

शंका-- सर्वबाह्य समुद्र ही है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान-- 'स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य द्वीपमें स्थित ऐसा न कहकर स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य तटपर स्थित' ऐसा जो सूत्र है उसीसे वह जाना जाता है ।

अपनी बाह्य वेदिका पर्यन्त स्वयम्भूरमण समुद्र है, उसीके बाह्य तटसे अभिप्राय समुद्रके परभूभागप्रदेशका है । वहांपर स्थित, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य तटका अर्थ उसकी अंगभूत बाह्य वेदिका है, वहां स्थित महामत्स्य, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । किन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर आगे कहे जानेवाले 'तनुवातवलयसे संलग्न हुआ' इस सूत्रके साथ विरोध आता है । कारण कि स्वयम्भूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकासे तीनों ही वातावलय सम्बद्ध नहीं हैं, क्योंकि, वैसा होनेपर तिर्यग्लोक सम्बन्धी विस्तारप्रमाणके एक राजुसे हीन होनेका प्रसंग आता है ।

शंका-- वह कैसे जाना जाता है ?

समाधान-- चूंकि जम्बूद्वीप सम्बन्धी एक लाख योजन प्रमाण विस्तारकी अपेक्षा दुगुणे क्रमसे गये हुए सब द्वीप-समुद्रोंके विस्तारोंको मिलानेपर जगश्रेणिका सातवां भाग (राजु) उत्पन्न नहीं होता है, अतः इसीसे जाना जाता है कि तीनों वातवलय स्वयम्भुरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकासे सम्बद्ध नहीं है ।

शंका-- वह भी कैसे जाना जाता है ?

समाधान-- एक अधिक द्वीप-समुद्र सम्बन्धी रूपोंका विरलन कर दुगुणा करके परस्पर गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उसमें तीन रूपोंको कम करके एक लाख योजनसे गुणित करनेपर द्वीप-समुद्रों द्वारा रोके गये तिर्यग्लोक क्षेत्रका आयाम उत्पन्न होता है, अतः इसीसे जाना जाता है कि उक्त प्रकारसे जगश्रेणिका सातवां भाग नहीं उत्पन्न होता ।

✲ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्योः 'समुद्दयबाहिरे'; ताप्रतौ 'समुद्दे बाहिरे' इति पाठः । ⊛ षट् भा. ३ पृ ३७

त्तमभागम्मि पंचसुण्णाणुवलंभादो। ण च एदम्हादो रज्जुविक्खंभो ऊणो होदि, रज्जुअब्भंतरभूदस्स चउव्बीसजोयणमेत्तवादरुद्धक्खेत्तस्स बज्झमुवलंभादो। ण च तेत्तियमेत्तं पक्खित्ते पंचसुण्णाओ फिट्टंति, तहाणुवलंभादो। तम्हा सयलदीव-सायर-विक्खंभादो बाहिं केत्तिएण वि क्खेत्तेण होदव्वं। सयंभुरमणसमुद्दब्भंतरे ट्ठिदमहामच्छो जलचरो कधं तस्स बाहिरिल्लं तडं गदो ? ण एस दोसो, पुव्ववइरियदेवपओगेण तस्स तत्थ गमणसंभवादो।

वेयणसमुग्घादेण समुहदो ॥ ९ ॥

वेयणावसेण जीवपदेसाणं विक्खंभुस्सेहेहि तिगुणविफुंजणं❋ वेयणासमुग्घादो णाम। ण च एस णियमो सव्वेसिं जीवपदेसा वेयणाए तिगुणं चेव विफुज्जंति✿ त्ति, किंतु सगविक्खंभादो तरतमसरूवेण ट्ठिदवेयणावसेण एग-दोपदेसादीहि वि वड्ढी होदि। ते वेयणसमुग्घादा एत्थ ण गहिदा, उक्कस्सेण खेत्तेण अहियारादो। महामच्छो चेव किमिदि वेयणसमुग्घादं णीदो ? महल्लोगाहणत्तादो, जलयरस्स थले खित्तस्स उण्हेण दज्झमाणंगस्स संचियबहुपावकम्मस्स महावेयणुप्पत्तिदंसणादो च।

तिर्यग्लोकका विस्तार इतने मात्र ही हो, सो भी नहीं है; क्योंकि, जगश्रेणिके सातवें भागमें पांच शून्य नहीं पाये जाते। और इससे राजुविष्कम्भ हीन भी नहीं है, क्योंकि, राजुके अन्तर्गत चौबीस योजन प्रमाण वायुरुद्ध क्षेत्र बाह्यमें पाया जाता है। दूसरे उतने मात्र क्षेत्रको मिलानेपर पांच शून्य नष्ट भी नहीं होते, क्योंकि, वैसा पाया नहीं जाता। इसी कारण समस्त द्वीप-समुद्र सम्बन्धी विस्तारके बाहिर भी कुछ क्षेत्र होना चाहिये।

शंका-- स्वयम्भूरमण समुद्रके भीतर स्थित महामत्स्य जलचर जीव उसके बाह्य तटको कैसे प्राप्त होता है ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पूर्वके वैरी किसी देवके प्रयोगसे उसका वहां गमन सम्भव है।

वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ ॥ ९ ॥

वेदनाके वशसे जीवप्रदेशोंके विष्कम्भ और उत्सेधकी अपेक्षा तिगुणे प्रमाणमें फैलनेका नाम वेदनासमुद्घात है। परन्तु सबके जीवप्रदेश वेदनाके वशसे तिगुणे ही फैलते हों, ऐसा नियम नहीं है। किन्तु तरतम रूपसे स्थित वेदनाके वशसे अपने विष्कम्भकी अपेक्षा एक दो प्रदेशादिकोंसे भी वृद्धि होती है। परन्तु उन वेदनासमुद्घातोंका यहां ग्रहण नहीं किया गया है, क्योंकि, यहां उत्कृष्ट क्षेत्रका अधिकार है।

शंका-- महामत्स्यको ही वेदनासमुद्घातको क्यों प्राप्त कराया है ?

समाधान-- क्योंकि, एक तो उसकी अवगाहना बहुत अधिक है, दुसरे जलचर जीवको स्थलमें रखनेपर उष्णताके कारण अंगोंके संतप्त होनेसे बहुत पापकर्मोंके संचयको प्राप्त हुए उसके महा वेदनाकी उत्पत्ति देखी जाती है।

❋ मुद्रितप्रतौ 'विपुंजण' इति पाठः। ✿ मुद्रितप्रतौ 'विपुंजंति' इति पाठः।

कायलेस्सियाए लग्गो ॥ १० ॥

कायलेस्सिया णाम तदियो वादवलओ। कधं तस्स एसा सण्णा? कागवण्णत्तादो सो कागलेस्सिओ णाम। एत्थ अंधकायलेस्सा ण घेत्तव्वा, तत्थ अंधत्तवण्णाणुवलंभादो। लोगवड्डिवसेण लोगनाडीदो परदो संखेज्जजोयणाणि ओसरिय ट्ठिदतदियवादे लोगणालीए अब्भंतरट्ठिदमहामच्छो कधं लग्गदे? सच्चमेदं महामच्छस्स तदियवादेण संपासो णत्थि त्ति। किंतु एसा सत्तमी सामीवे वट्टदे। न च सप्तमी सामीप्ये असिद्धा, गंगायां घोषः प्रतिवसतीत्यत्र सामीप्ये सप्तम्युपलंभात्। तेण काउलेस्सियाए छुत्तदेसो काउलेस्सिया त्ति गहिदो। तीए काउलेस्सियाए जाव लग्गदि ताव वेयणासमुग्घादेण समुहदो त्ति उत्तं होदि। भावत्थो– पुव्ववेरियदेवेण महामच्छो सयंभूरमणबाहिरवेइयाए बाहिरे भागे लोगणालीए समीवे पादिदो। तत्थ तिव्ववेयणावसेण वेयणसमुग्घादेण समुग्घादो जाव लोगणालीए बाहिरपेरंतो लग्गो त्ति उत्तं होदि।

जो तनुवातवलयसे स्पृष्ट है ॥ १० ॥

काकलेश्याका अर्थ तीसरा वातवलय है।

शंका-– उसकी यह संज्ञा कैसे है?

समाधान–– तनुवातवलयका काकके समान वर्ण होनेसे उसकी काकलेश्या संज्ञा है।

यहां अंधकाकलेश्या (काला स्याह काकवर्ण) का ग्रहण नहीं करना चाहिये, क्योंकि, उसमें अंधत्व अर्थात् काला स्याह वर्ण नहीं पाया जाता।

शंका–– लोकनालीके भीतर स्थित महामत्स्य लोकविस्तारानुसार लोकनालीके आगे संख्यात योजन जाकर स्थित तृतीय वातवलयसे कैसे संसक्त होता है?

समाधान–– यह सत्य है कि महामत्स्यका तृतीय वातवलयसे स्पर्श नहीं होता, किन्तु यह सप्तमी विभक्ति सामीप्य अर्थमें है। यदि कहा जाय कि सामीप्य अर्थमें सप्तमी विभक्ति असिद्ध है, सो भी ठीक नहीं है; क्योंकि 'गंगामें घोष (ग्वालवसति) बसता है' यहां सामीप्य अर्थमें सप्तमी विभक्ति पायी जाती है। इसलिये कापोतलेश्यासे स्पृष्ट प्रदेश भी कापोतलेश्या रूपसे ग्रहण किया गया है। उस कापोतलेश्यासे जहां तक संसर्गित होता है वहां तक वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ, यह उसका अभिप्राय है।

भावार्थ–– पूर्वके वैरी किसी देवके द्वारा महामत्स्य स्वयम्भूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकाके बाहिर भागमें लोकनालिके समीप पटका गया। वहां तीव्र वेदनाके वश वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त होकर लोकनालीके बाह्य भाग पर्यन्त वह संसक्त होता है, यह अभिप्राय है।

ताप्रतौ 'अद्धकायलेस्सा' इति पाठः। ताप्रतौ 'अव्वत्त' इति पाठः। ताप्रतौ 'समीवे' इति पाठः। ताप्रतौ 'ण च सप्तमी सामीप्ये' इति पाठः। ताप्रतौ 'सप्तम्युपलंभादो' इति पाठः। प्रतिषु 'पुत्तीदो'; ताप्रतौ पुत्ती (पति) दो इति पाठः। आ-प्रतौ 'धत्तिदो' इति पाठः। प्रतिषु 'समुग्घादो' इति पाठः।

पुणरवि मारणंतियसमुग्घादेण समुहदो तिण्णि विग्गहकंडयाणि कादूण ॥ ११ ॥

महामच्छो लोगणालीए वायव्वदिसाए पुव्ववेरियदेवसंबंधेण दक्खिणुत्तरायामेण पदिदो । तत्थ मारणंतियसमुग्घादेण समुहदो । तेण महामच्छेण वेयणसमुग्घादेण मारणंतियसमुग्घादं करंतेण तिण्णि विग्गहकंडयाणि कदाणि । विग्गहो णाम वक्कत्तं, तेण तिण्णि कंडयाणि कदाणि । तं जहा– लोगणालीवायव्वदिसादो कंडुज्जुवाए गईए सादिरेयअद्धरज्जूमेत्तमागदो दक्खिणदिसाए । तमेगं कंडयं । पुणो तत्तो वलिदूण कंडुज्जुवाए गईए एगरज्जुमेत्तं पुव्वदिसमागदो❀ । तं बिदियं कंडयं । पुणो तत्तो वलिदूण अधो छरज्जुमेत्तद्धाणमुजुगदीए गदो । तं तदिय कंडयं । एवं तिण्णि कंडयाणि✡ कादूण मारणंतियसमुग्घादं गदो । चत्तारि कंडए किण्ण कराविदो ? ण, तसेसु दो विग्गहे मोत्तूण तिण्णिविग्गहाणमभावादो । तं कधं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो ।

से काले अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उप्पज्जिहिदि त्ति तस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो उक्कस्सा ॥ १२ ॥

फिर भी जो तीन विग्रह करके मारणान्तिकसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ है ॥ ११ ।

महामत्स्य लोकनालीकी वायव्य दिशामें पूर्वके वैरी देवके सम्बन्धसे दक्षिण-उत्तर आयाम स्वरूपसे गिरा । वहां वह मारणान्तिकसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ । वेदना– समुद्घातके साथ मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले उक्त महामत्स्यने तीन विग्रहकाण्डक किये । विग्रहका अर्थ वक्रता है, उससे तीन काण्डक किये । वे इस प्रकारसे-- लोकनालीकी वायव्य दिशासे बाणके समान ऋजुगतिसे साधिक अर्ध राजु मात्र दक्षिण दिशामें आया । वह एक काण्डक हुआ । फिर वहांसे मुडकर बाण जैसी सीधी गतिसे एक राजू मात्र पूर्व दिशामें आया । वह द्वितीय काण्डक हुआ । फिर वहांसे मुडकर नीचे छह राजु मात्र मार्गमें ऋजुगतिसे गया । वह तृतीय काण्डक हुआ । इस प्रकार तीन काण्डकोंको करके मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुआ ।

शंका-- चार काण्डकोंको क्यों नहीं कराया ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, त्रसोंमें दो विग्रहोंको छोडकर तीन विग्रह नहीं होते ।

शंका – वह कैसे ज्ञात होता है ?

समाधान-- वह इसी सूत्रसे ज्ञात होता है ।

अनन्तर समयमें वह सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न होगा, अतः उसके ज्ञानावरणीयवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ १२ ॥

❀ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्योः 'पुव्वदिसावसमागदो', ताप्रतौ 'पुव्वदिसाव (ए) समागदो' इति पाठः । ✡ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्योः 'तं तदियकंडयाणि', ताप्रतौ 'तं तदियकंड (यं) । या (ता) णि' इति पाठः ।